प्रश्न :- संध्या भाषा किसे कहते हैं?

उत्तर :- सिद्धों की भाषा को सन्धा या सन्ध्या भाषा कहा जाता है, जिससे कुछ इस प्रकार का आशय लिया जाता है—

1. अन्धकार और प्रकाश के बीच सन्ध्या की भाँति जिसकी रचना स्पष्टता और अस्पष्टता के बीच हो, जिसे स्पष्ट करने के लिए ज्ञान-प्रकाश की आवश्यकता है।
2. जो भाषा सन्धिस्थल की हो। बिहार और बंगाल की सीमा पर लिखी जाने के कारण सिद्धों की भाषा का नाम सन्ध्या भाषा पड़ा।
3. जिसमें किसी प्रकार का रहस्य हो।

लेकिन उपर्युक्त तीनों मत पूर्णतया स्पष्ट नहीं हैं। सर्वप्रथम जनभाषा में स्पष्टता और अस्पष्टता की बात ही असंगत है। इसमें जनभाषा होने के कारण देशज शब्दों के आ जाने से साहित्यिक दृष्टि से अस्पष्टता आ जाना स्वाभाविक है। इस आधार पर यदि किसी भाषा को सन्ध्या भाषा कहा जाय तो उर्दू भी, जो हिन्दी में अरबी और फारसी के मिश्रण से बनी है, सन्ध्या भाषा कही जानी चाहिए। सन्धि-स्थल की भाषा कहना तो बिल्कुल ही अनुचित है, क्योंकि बंगाल और बिहार की सीमा तो आधुनिककाल में निर्धारित की गई है, सिद्धों के समय में उसका अस्तित्व ही नहीं था। रहस्यात्मकता के कारण यदि सिद्धों की भाषा को सन्ध्या भाषा का नाम दिया जाय तो इससे यह कहना होगा कि हिन्दी-साहित्य का अधिकांश भाग - जिसमें रहस्य और गूढ़ार्थ तथ्य व्यंजना है - भी सन्ध्या भाषा के अन्तर्गत है।

डॉ० रामकुमार वर्मा संध्या भाषा का अर्थ उस भाषा से लेते हैं जो भाषा अपभ्रंश काल के अंतिम चरण में लिखी गई। उनका मत है कि संध्या का अर्थ किसी काल के अन्त होने से लिया जाता है

चूँकि अपभ्रंश काल अपनी समाप्ति पर थी, अतः सिद्धों की भाषा संध्या भाषा कहलाई। इस सब विवेचन से यह परिणाम निकलता है कि सिद्धों के रहस्यमय भावों की अभिव्यक्ति का साधन तथा अपभ्रंश भाषा की अन्तिम स्थिति की सूचना देना ही अस्पष्ट-सी भाषा ही संध्या भाषा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न – संध्या भाषा क्या है, बतायें ?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.B.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० नं० - 7909046087
दिनांक – 03.02.2022